नॉर्थ अमेरिकन इंडियंस

यह मेरी किताब है,

मेरा नाम है

.....

कृपया क्या आप मेरे लिए इसे पढ़ेंगे?

धन्यवाद!

नॉर्थ अमेरिकन इंडियंस

क्यूनाह
कमांचे मुखिया
फोर बीयर्स
मेन्डन मुखिया
रेड शर्ट
टेटन सियोक्स योद्धा
ब्रिग सोल्जर
यंकटन सियोक्स योद्धा
नॉर्थ
अमेरिकन
इंडियंस
द्वारा
मैरी
एवं
डगलस गोर्सलीन

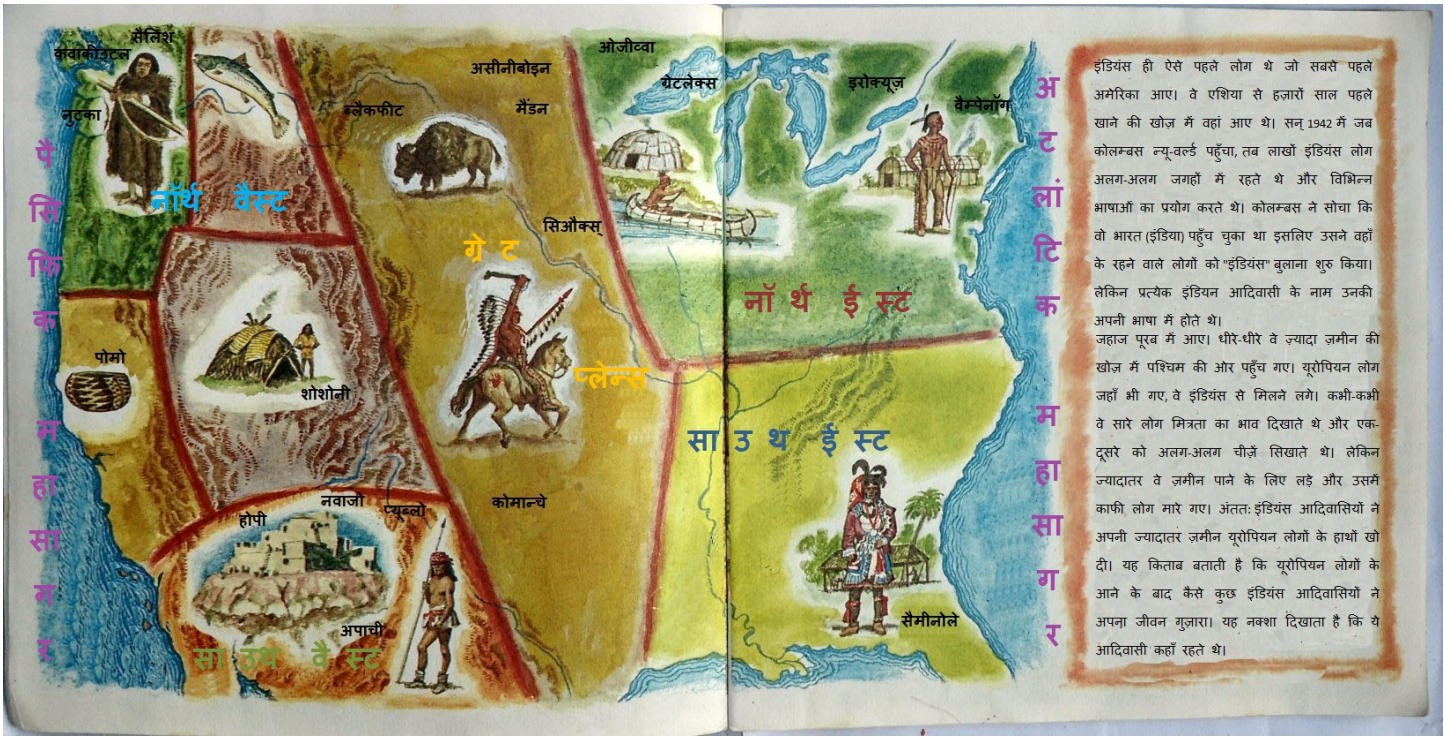

इंडियंस ही ऐसे पहले लोग थे जो सबसे पहले अमेरिका आए। वे एशिया से हज़ारों साल पहले खाने की खोज़ में वहां आए थे। सन् 1942 में जब कोलम्बस न्यू-वर्ल्ड पहुँचा, तब लाखों इंडियंस लोग अलग-अलग जगहों में रहते थे और विभिन्न भाषाओं का प्रयोग करते थे। कोलम्बस ने सोचा कि वो भारत (इंडिया) पहुँच चुका था इसलिए उसने वहाँ के रहने वाले लोगों को "इंडियंस" बुलाना शुरु किया। लेकिन प्रत्येक इंडियन आदिवासी के नाम उनकी अपनी भाषा में होते थे।

जहाज पूरब में आए। धीरे-धीरे वे ज़्यादा ज़मीन की खोज़ में पश्चिम की ओर पहुँच गए। यूरोपियन लोग जहाँ भी गए, वे इंडियंस से मिलने लगे। कभी-कभी वे सारे लोग मित्रता का भाव दिखाते थे और एक-दूसरे को अलग-अलग चीज़ें सिखाते थे। लेकिन ज़्यादातर वे ज़मीन पाने के लिए लड़े और उसमें काफी लोग मारे गए। अंततः इंडियंस आदिवासियों ने अपनी ज़्यादातर ज़मीन यूरोपियन लोगों के हाथों खो दी। यह किताब बताती है कि यूरोपियन लोगों के आने के बाद कैसे कुछ इंडियंस आदिवासियों ने अपना जीवन गुज़ारा। यह नक्शा दिखाता है कि ये आदिवासी कहाँ रहते थे।

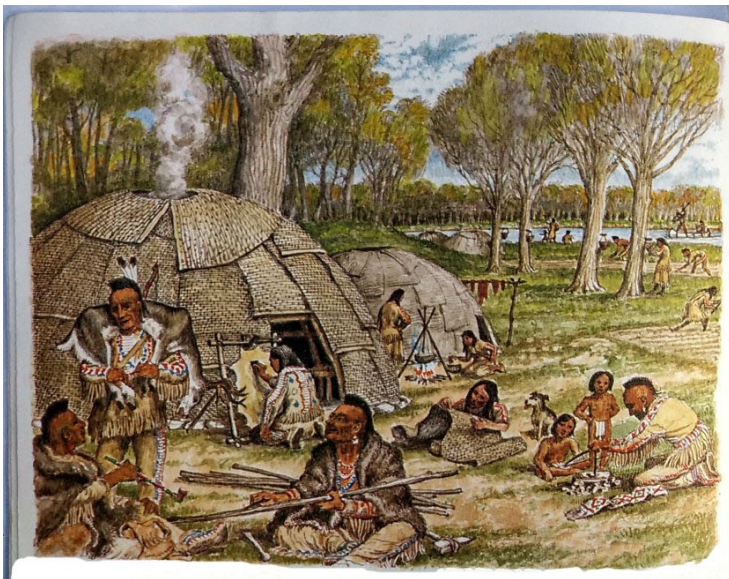

पहले आने वाले यूरोपियन्स अलगोकियन्स आदिवासियों से मिले जो अटलांटिक तट के पास मछली पकड़ने और शिकार करने का काम करते थे। उनके आदमी खंभों से विगवम्स (तम्बू) बनाते थे जो कि गुम्बद के आकार का होता था, उसके बाद औरतें उसे पेड़ों की छाल या चटाई से ढकती थीं और धुआँ निकलने के लिए ऊपर एक छेद छोड़ती थीं। सीपियों से इंडियंस लोग मनके (मोती) बनाते थे जिन्हें "वैम्पम" कहा जाता था। वैम्पम को वे बैल्ट और हिरन की खाल से बने कपड़ों में सिलते थे। वे वैम्पम का प्रयोग कभी-कभी पैसा कमाने के लिए भी करते थे। वैम्पनॉग इंडियंस ने, यूरोपियन्स को मक्का और स्क्वैश की खेती करना भी सिखाया।

सेमीनॉल नामक शब्द का अर्थ था "भागजाना"। जब यूरोपियन्स जॉर्जिया में पहुँचे, सेमीनॉल इंडियंस अपनी उपजाऊ ज़मीनों को छोड़कर वहाँ से भाग गए। वे फ्लोरिडा के दलदलों में भाग गए जहाँ वे शिकार और मछली पकड़ने का काम करने लगे। वहाँ का मौसम गरम होने के कारण सेमीनॉल्स ने वहाँ बिना दीवारों के घर बनाए जिन्हें वे चिकीस कहते थे। दलदली जगहों में वे बाँस के डंडों की बड़ी संरचना बनाकर उस पर घर बनाते थे। ओसियोला जो सेमीनॉल्स का मुखिया था, अपनी ज़मीनों को यूरोपियन्स के हाथों में नहीं जाने देना चाहता था।

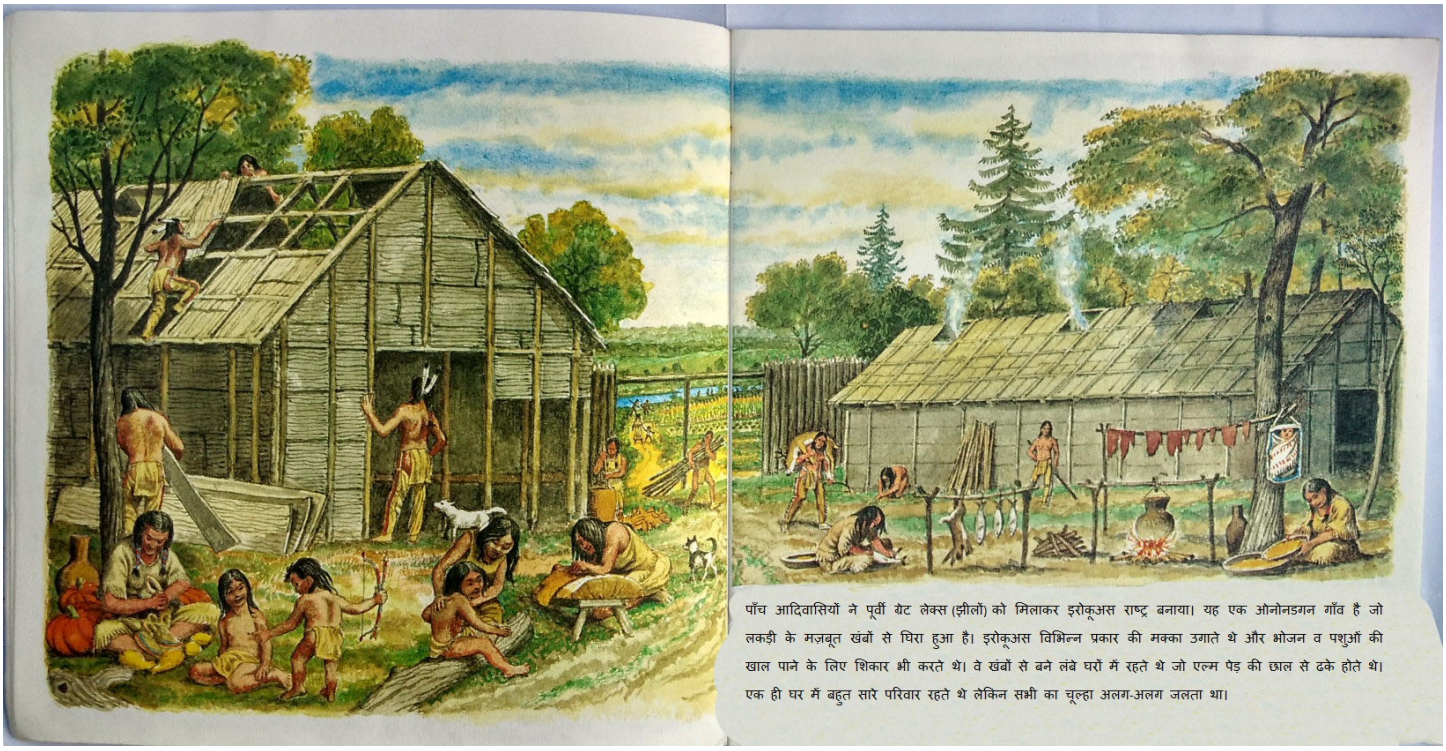

पाँच आदिवासियों ने पूर्वी ग्रेट लेक्स (झीलों) को मिलाकर इरोक्वॉअस राष्ट्र बनाया। यह एक ओनोनडगन गाँव है जो लकड़ी के मज़बूत खंबों से घिरा हुआ है। इरोक्वॉअस विभिन्न प्रकार की मक्का उगाते थे और भोजन व पशुओं की खाल पाने के लिए शिकार भी करते थे। वे खंबों से बने लंबे घरों में रहते थे जो एल्म पेड़ की छाल से ढके होते थे। एक ही घर में बहुत सारे परिवार रहते थे लेकिन सभी का चूल्हा अलग-अलग जलता था।

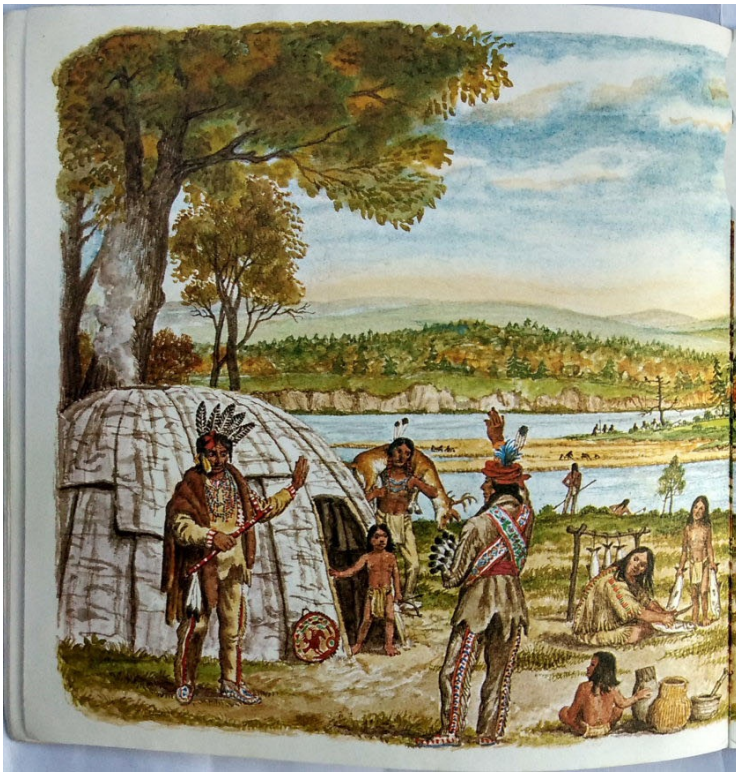

पश्चिमी ग्रेट लेक्स के आदिवासियों को पीपल ऑफ द 'कैलुमैट' कहा जाता था। 'कैलुमैट' एक पाइप का टुकड़ा (सिगार) होता है। जब इंडियंस लोग एक दूसरे से मिलते थे तो इससे सिगार पीकर एक दूसरे का स्वागत करते थे। यहाँ ओजिब्वास का एक समूह है। उनकी ज़मीन खेती के लिए बहुत अच्छी नहीं थी

इसलिए वे मछली पकड़ने और शिकार के लिए एक ज़गह से दूसरी ज़गह घूमते रहतेथे। गर्मी के मौसम में वे बर्च की लकड़ी से बनी हल्की नाव में बैठकर नदी और तालाबों में उगने वाले जंगली चावल को इकट्ठा करते थे।

नॉर्थ अमेरिका का ग्रेट प्लेन्स मिसीसिप्पी नदी और रॉकी पहाड़ों के बीच में है। ग्रेट प्लेन्स के इंडियंस भैंसों का शिकार कर के अपनी जीविका चलाते थे। एसिनीबोइन आदिवासी नंगे पैर शिकार करते थे। सर्दियों में वे बर्फ वाले जूते पहनकर घनी बर्फ में भैंसों का पीछा करते थे जहाँ उन्हें आसानी से पकड़ा जा सकता था। इंडियंस लोग भैंसों की मोटी खाल से गर्म कपड़े बनाते थे।

उत्तरी मैदान के इंडियंस लोग स्लेज और टोबोगान्स बनाते थे जिसे वे अपने काम करने और खेलने के लिए प्रयोग करते थे। कुत्तों से खींचने वाली स्लेज, भैंसों का शिकार करने के लिए प्रयोग की जाती थी। शियान आदिवासी उत्तरी मैदानी भाग में भैंसों का शिकार करने आते थे। जब उनका शिकार हो जाता था तब वे खेलों का आनन्द लेते थे। उनकी स्लेज में भैंसों की पसलियों से बने रनर्स होते थे जो कि बर्फ के ऊपर आसानी से लुढ़क सकते थे।

मैन्डन्स पहले मैदानी आदिवासी थे जिन्होंने घोड़ों का प्रयोग किया। (स्पेन के प्रवासी ही सबसे पहले घोड़ों को अमेरिका लाए थे।) मैन्डन्स, अर्थ लॉज में रहते थे जो कि लट्ठों के ऊपर घास और मिट्टी की मज़बूत तह लगाकर बनाए जाते थे।

अर्थ लॉज इतने मज़बूत होते थे कि लोग उनकी छत पर चढ़कर आसानी से बैठ सकते थे। एक लॉज लगभग चालीस लोगों को शरण दे सकता था और कुछ लोग उसमें अपने पसंदीदा घोड़ों को भी साथ रखते थे।

मैन्डन्स पुरुष भैंसों का शिकार करते थे और उनकी औरतें मक्का व बीन्स की खेती करती थीं। मैन्डन्स भैंसों की चमड़ी को लकड़ी के हल्के से फ्रेम पर तानकर नाव बनाते थे।

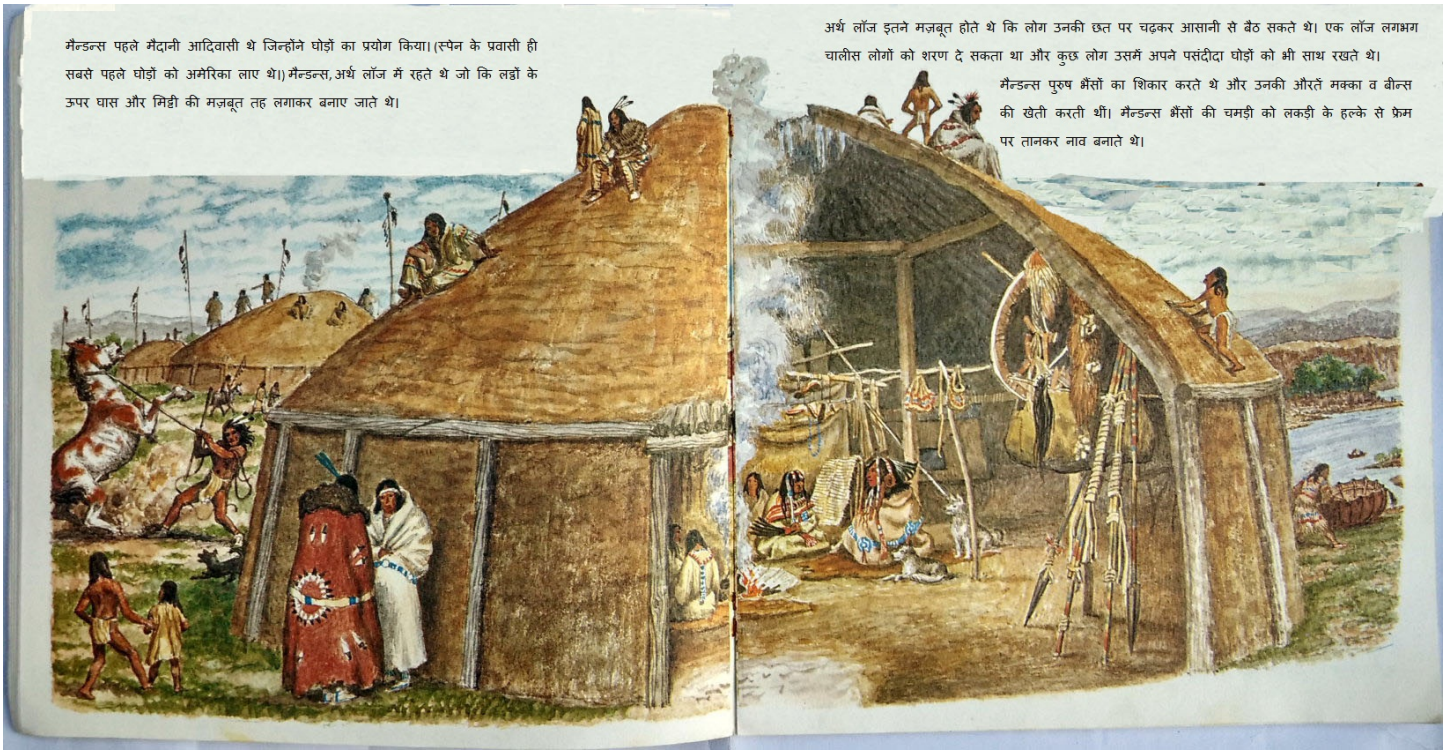

मैदानी भागों में रहने वाले इंडियंस के लिए घोड़ों द्वारा भैंसों के झुण्ड का पीछा करना आसान हो गया था। वे बिना घोड़ों के शिकार नहीं कर पाते थे। आदिवासी अपने घर-वार को साथ लेकर और सारे सामान को घोड़ों पर लादकर भैंसों के झुंड का पीछा करते थे। घोड़ों के आने के बाद हर जगह से आए आदिवासी मैदानी क्षेत्रों में आकर बस गए और शिकार करने लगे। वे लोग एक बार में बहुत सारी भैंसों का शिकार कर सकते थे इसलिए उन्हें खेती करने की जरूरत भी नहीं थी।

मैदानी भागों में रहने वाले इंडियंस का मुख्य भोजन भैंसों का माँस था। भैंसों के माँस से वे कपड़े, जूते, कंबल, शील्ड और टीपीज (कपड़े के टैन्ट) बनाते थे। भैंसों की हड्डी, सींग और खुर उनके औज़ार, हथियार, प्याले और झुनझुने बनाने के काम आते थे।

ब्लैकफीट, भैंसों का शिकार करने वाले कुशल शिकारी होते थे। उनके तम्बू पर बनी हुई पेंटिंग्स शिकार के दौरान पुरुषों की बहादुरी का बखान करती थीं। इंडियंस बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। जब वे छोटे होते थे, तब वे अपने माता-पिता के साथ घोड़ों की सवारी करते थे। लड़के छोटे तीर कमान लेकर शिकार का खेल खेलते थे। लड़कियाँ खाना बनाने और भैंसों के माँस को संभाल कर रखने में मदद करती थीं।

औरतें ओखल और मूसल से भैंसों के सूखे माँस, चर्बी और बेरीज को पीसकर एक प्रकार का भोजन बनाती थीं जिसे पेमीकन कहते थे। पेमीकन एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जाया जा सकता था और महीनों तक बिना खराब हुए रखा जा सकता था।

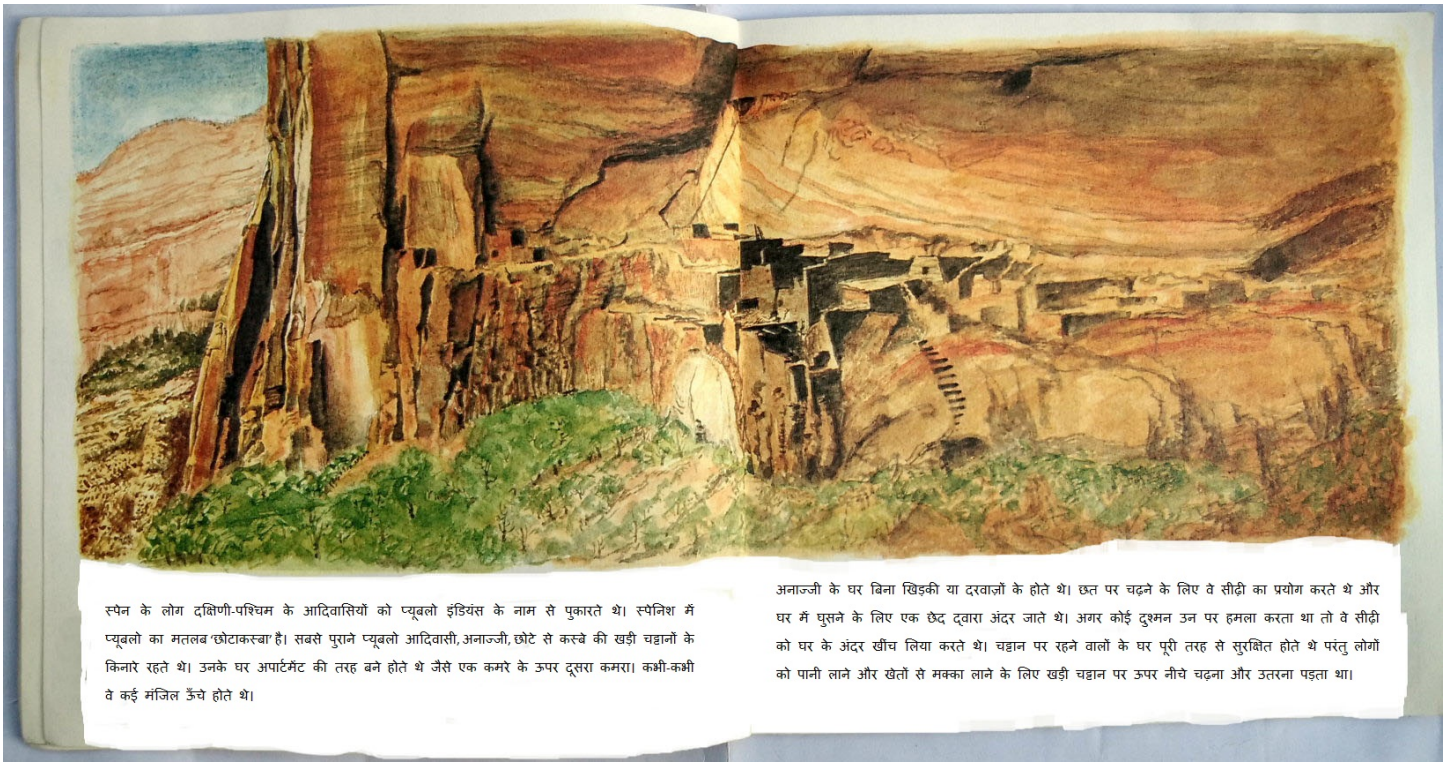

स्पेन के लोग दक्षिणी-पश्चिम के आदिवासियों को प्यूबलो इंडियंस के नाम से पुकारते थे। स्पेनिश में प्यूबलो का मतलब 'छोटाकस्बा' है। सबसे पुराने प्यूबलो आदिवासी, अनाज्जी, छोटे से कस्बे की खड़ी चट्टानों के किनारे रहते थे। उनके घर अपार्टमेंट की तरह बने होते थे जैसे एक कमरे के ऊपर दूसरा कमरा। कभी-कभी वे कई मंजिल ऊँचे होते थे।

अनाज्जी के घर बिना खिड़की या दरवाज़ों के होते थे। छत पर चढ़ने के लिए वे सीढ़ी का प्रयोग करते थे और घर में घुसने के लिए एक छेद द्वारा अंदर जाते थे। अगर कोई दुश्मन उन पर हमला करता था तो वे सीढ़ी को घर के अंदर खींच लिया करते थे। चट्टान पर रहने वालों के घर पूरी तरह से सुरक्षित होते थे परंतु लोगों को पानी लाने और खेतों से मक्का लाने के लिए खड़ी चट्टान पर ऊपर नीचे चढ़ना और उतरना पड़ता था।

प्यूबलो पहले अपने घरों को खंबों और पत्थरों की सहायता से बनाते थे और फिर उस पर क्ले और भूसे का मज़बूत प्लास्टर लगाते थे जिसे एडोब कहा जाता था। एडोब सूखने के बाद बहुत ही कड़ा हो जाता था। पुरुष भूमितल कमरों, जिन्हें किवास कहा जाता था, में गुप्त बैठकें किया करते थे।

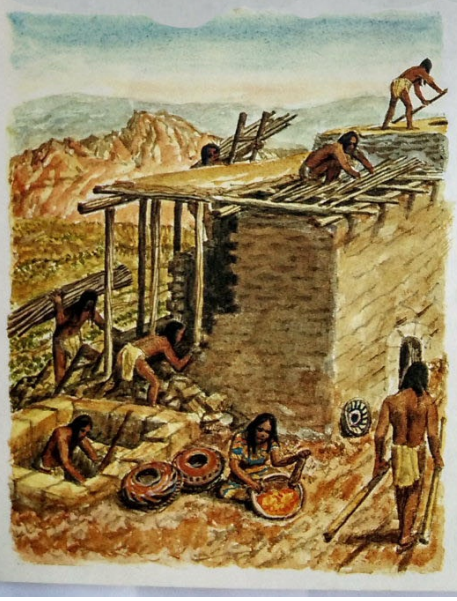

बहुत से प्यूब्लो लगातार हज़ारों साल तक चट्टानों पर ही रहते थे। अन्य लोग अपने शहर उच्च पठार (मेसेस) के शीर्ष पर या अपने खेतों के समीप समतल भूमि पर बनाते थे। ऐसे सूखे देश में खेती-बाड़ी करना आसान काम नहीं था परंतु होपी इंडियंस ने वहाँ पर रुई और मक्का उगाई। उन्होंने रुई से कपड़े बनाए। होपी महिलाओं ने सुंदर बर्तन और टोकरियाँ बनाईं।

प्यूब्लो इंडियंस के कुछ नृत्यों को आज भी वैसे ही नृत्य किया जाता है जैसे वे कई सैकड़ों वर्षों से करते आ रहे हैं। नर्तक एक प्लाज़ा में अपनी मंडली का निर्माण करते हैं। लोग ऊपर की छतों से देखते हैं और ड्रम की बीट्स सुनते हैं।

बारिश करने के लिए, अच्छी मकई उगाने के लिए, अच्छी फसलों के लिए आत्माओं को धन्यवाद देने के लिए, और बीमारी को ठीक करने के लिए प्यूब्लोज नृत्य करते थे। जब लड़के इतने बड़े हो जाते थे कि किवास की गुप्त बैठकों में शामिल हो सकें, तो पुरुषों के सभी गाने और कदम ध्यानपूर्वक उन्हें सिखाए जाते थे।

उत्तर से दो जंगी जनजातियाँ दक्षिण-पश्चिम के इलाकों में चली गईं और शांतिपूर्ण प्यूब्लोस पर छापा मारने लगीं। अपाचे आमतौर पर भोजन की तलाश में थे। उन्होंने स्पेनिश वासियों से घोड़े भी ले लिए। अपाचे महिलाओं ने ब्रश झोपड़ियाँ बनाईं, और जंगली नट और बीज इकट्ठा किए।

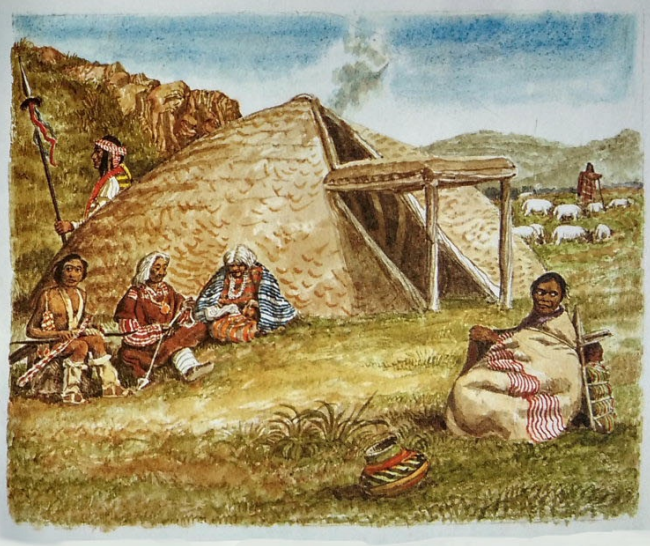

नवाजो जनजाति ने छापेमारी जारी नहीं रखी। वे फसलें उगाने और भेड़ पालने के लिए वहाँ बस गए। ऊन से उन्होंने सुंदर कंबल बनाए, जिसके लिए वे आज भी प्रसिद्ध हैं। नवाजो घर को होगन कहा जाता है। यह कई खंभों से बना होता है, जो हार्ड-पैकब्रश और पृथ्वी की मोटी परत से ढका होता है।

नॉर्थ वेस्ट कोस्ट के इंडियंस को समुद्र से मछलियों की अंतहीन आपूर्ति होती थी, और बड़े जंगलों से जानवर व लकड़ी प्राप्त होते थे। उन्होंने कीलों का उपयोग किए बिना बड़े-बड़े पक्के मकान बनाए। इनमें से कुछ आज भी खड़े हैं। पेड़ के विशाल तने से उन्होंने टोटेम पोल्स को उकेरा, जो एक परिवार का इतिहास बताता था।

यह क्वाकीटल गांव एक दावत कर रहा है, जिसे पोटलेच कहा जाता है। इस तरह की दावत के दौरान एक मुखिया अपने मेहमानों को दूसरे गांव से यह दिखाने के लिए भोजन, नक्काशीदार लकड़ी के बक्से और बुने हुए कंबल देता था कि वह कितना अमीर और शक्तिशाली था।

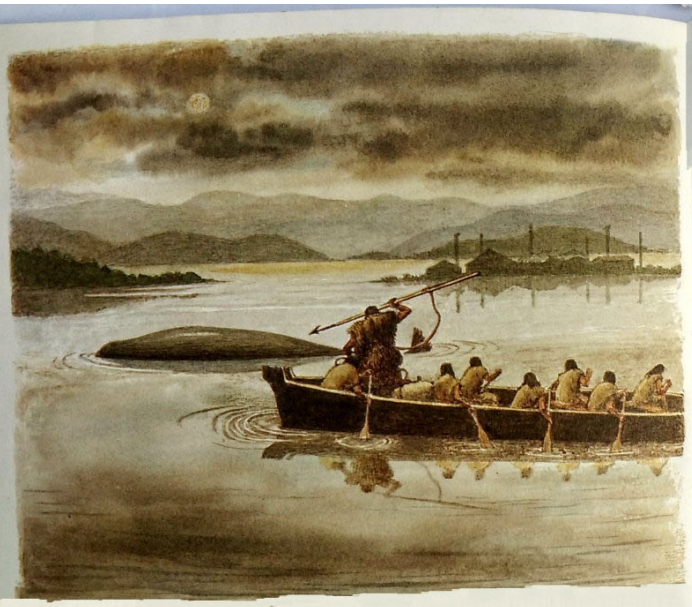

नुटका इंडियंस सकुशल व्हेलर और नाव बनाने वाले थे। उन्होंने विशाल, खोखले किए गए लॉग से अपनी डोंगी (नाव) का निर्माण किया। एक व्हेल आसानी से इनकी नाव को पलट सकती थी। लेकिन जब एक मुखिया के भाले ने एक व्हेल को मारा, तो लोग जल्दी से दूर हो गए, और विशाल जानवर को तब तक खींचते रहे जब तक कि वह लड़ने के लिए बहुत थक न गया।

हर साल उत्तर-पश्चिमी तट की नदियों और झील सैल्मन-मछली से भर जाती हैं। सलिश मछुआरे का अपना एक विशेष स्थान होता था, जहाँ से वह जाल के साथ सैल्मन-मछली को पकड़ता था। सैल्मन-मछली पकड़ने के मौसम के दौरान, एक आदमी पूरे वर्ष के लिए अपने परिवार को खिलाने के लिए पर्याप्त मछली पकड़ सकता था।

कई अमेरिकी शब्द, जिनमें राज्यों, शहरों, कस्बों और नदियों के नाम शामिल हैं, उत्तरी अमेरिका के इंडियंस से आए, जो कई अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे। जब एक जनजाति मैदानों पर एक दूसरे से मिलती थी, तो वे अक्सर एक दूसरे की भाषा नहीं बोलते थे। उन्होंने अपने हाथों से बात करने का एक तरीका बनाया, जिसे सांकेतिक भाषा कहा जाता था, जिसे सभी मैदानी इंडियंस समझते थे। वे धूम्र संकेतों का उपयोग करके एक लंबी दूरी पर संदेश भी भेज सकते थे।